सर्पदंश से मौतें आंकड़ों से कहीं ज़्यादा हैं

एक ताज़ा अध्ययन से पता चला है कि भारत में प्रति वर्ष सर्पदंश के चलते जितनी मौतें होती हैं वे सरकारी आंकड़ों से तीन गुना ज़्यादा हैं।

सांप काटने पर अधिकांश लोग सीधे किसी डॉक्टर के पास नहीं जाते। वे पहले किसी ज़हर उतारने वाले के पास जाते हैं। ज़हर उतारने वाले के पास तमाम किस्म के उपचार होते हैं और इनमें प्रमुख उपचार मंत्र वगैरह पढ़ने का होता है। उदाहरण के लिए, बांग्लादेश में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि सर्पदंश के शिकार मात्र 3 प्रतिशत व्यक्ति सीधे डॉक्टर के पास पहुंचते हैं। ये परिणाम *अमेरिकन सोसायटी ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन एण्ड हायजीन* की वार्षिक बैठक में प्रस्तुत किए गए थे। इसी बैठक में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के डेविड वॉरेल ने बताया कि सर्पदंश से होने वाली वास्तविक मौतों और सरकारी आंकड़ों में बहुत अंतर है। वॉरेल व साथियों ने अपने अध्ययन में पाया कि भारत में हर साल 46,000 लोग सर्पदंश से मरते हैं, जबकि सरकारी आंकड़ा मात्र 2000 का है।

वॉरेल व साथियों ने पहली बार इस तरह का अध्ययन किया है। इसमें मृत्यु दर का अनुमान लगाने के लिए सिर्फ अस्पताल में पहुंचने वाले मरीज़ों की संख्या नहीं देखी गई थी, बल्कि प्रभावित समुदायों के साथ बातचीत करने का प्रयास किया गया था।

सर्पदंश से सर्वाधिक पीड़ित क्षेत्र एशिया, उप-सहारा अफ्रीका तथा लातिन अमरीका पाए गए। सर्पदंश के अधिकांश मामले ग्रामीण व गरीब इलाकों में होते हैं। समस्या का सबसे ज़्यादा प्रभाव ऐसे दूर-दराज़ इलाकों में होने की वजह से मरीज़ अस्पताल तक पहुंच ही नहीं पाते। अतः इन अस्पतालों के डॉक्टरों को इस समस्या की भयावहता का अंदाज़ भी नहीं होता। वैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सर्पदंश को उपेक्षित कटिबंधीय रोग के रूप में वर्गीकृत किया है। वॉरेल के मुताबिक "इक्कीसवीं सदी में सर्पदंश उपेक्षित बीमारियों में से भी सर्वाधिक उपेक्षित है।" ***(स्रोत फीचर्स)***